विचार बिन्दु

पराधीनता समाज के समस्त मौलिक निमयों के विरुद्ध है। –मान्तेस्क्यु

पुरस्कार, सम्मान और प्रतिष्ठा के बदलते रूप-रंग

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। लेकिन यह कथन अनेक पेचीदगियों से भरा है। आदमी को आखिर कितनी रोटी, कितना कपड़ा और कितना बड़ा मकान चाहिए? इन सबके स्तर का कितना महत्व है? मुबंई की चालों में जो रहते हैं वे मकान में ही रहते हैं और वहीं कल्पनातीत वैभवपूर्ण अट्टालिकाएं भी हैं। जिनके पास वे हैं, वे उनसे भी संतुष्ट नहीं हैं। और फिर यह बात भी देखें कि मनुष्य अपनी इन मूलभूत ज़रूरतों को पूरा करके भी संतुष्ट नहीं हो जाता है। उसे कुछ और की तलब भी लगी रहती है। कुछ और, जैसे उसके होने की सामाजिक स्वीकृति – जो उसे मिलती है विभिन्न पुरस्कारों या सम्मानों से। और मनुष्य की यही आकांक्षा जन्म देती है पुरस्कारों और सम्मानों की व्यवस्था को, उनके तंत्र को। यहीं यह भी स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा कि ये दोनों एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं।

सामान्यतः पुरस्कार किसी विशिष्ट उपलब्धि, कृति, सृजन, प्रदर्शन या योगदान के मूल्यांकन के बाद दिए जाते हैं। उनमें प्रतियोगिता, चयन और तुलनात्मक श्रेष्ठता का तत्व निहित होता है। एक लेखक को उसके उपन्यास पर पुरस्कार मिलता है, किसी वैज्ञानिक को उसकी खोज पर, किसी खिलाड़ी को उसके प्रदर्शन पर, किसी फ़िल्म को उसकी पटकथा या संवादों पर, आदि। पुरस्कार का संबंध उपलब्धि से होता है। उसमें निर्णायक मंडल होते हैं, मानदंड होते हैं, और कम से कम सैद्धांतिक रूप से एक चयन प्रक्रिया होती है। पुरस्कारों के लिए कभी प्रस्ताव आमंत्रित किए जाते हैं तो कभी निर्णायक मण्डल अपनी तरफ से पुरस्कारों के दावेदारों का चयन करता है और फिर विमर्श के बाद यह निर्णय किया जाता है कि पुरस्कार किसको दिया जाएगा। पुरस्कारों के भी अपने-अपने स्तर होते हैं। कोई पुरस्कार कितनी राशि का है इस बात के साथ-साथ उसकी प्रतिष्ठा क्या है – इसका भी महत्व होता है।

इसके विपरीत सम्मान का क्षेत्र कहीं अधिक व्यापक और सूक्ष्म है। सम्मान किसी एक उपलब्धि का प्रतिफल नहीं, बल्कि व्यक्ति की समग्र सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रभाव, पद, लोकप्रियता या प्रतीकात्मक महत्ता की स्वीकृति भी हो सकता है। सम्मान में प्रतियोगिता कम, सार्वजनिक स्वीकृति का संदेश अधिक होता है। वह कई बार व्यक्ति विशेष से अधिक उस छवि का भी अभिनंदन होता है जिसे समाज या सत्ता अपने समय में प्रतिष्ठित करना चाहते है। हाल के समय में हमने देखा हैं कि जब सत्ता बदलती है तो वह अपने सम्माननीयों की एक फौज भी साथ लाती है और तरह-तरह से उन्हें सम्मानित कर उन्हें तथा उनके माध्यम से अपने सोच या अपनी वैचारिकताको सामाजिक स्वीकृति दिलवाने के प्रयास करती है।

सैद्धांतिक रूप से यह सब ठीक लगता है। अच्छे काम के लिए पुरस्कार और अच्छी छवि या उम्दा योगदान के लिए सम्मान। इसमें क्या हर्ज़ है? लेकिन बात इतनी सीधी-सपाट भी नहीं है। बल्कि कहें कि इसे सीधी सपाट रहने नहीं दिया गया है, जटिल और विवादास्पद बना दिया गया है। पुरस्कारों की विश्वसनीयता पर प्रायः चर्चा होती रहती है। इसको क्यों मिला, उसे क्यों नहीं मिला जैसे सवाल उठते हैं। पुरस्कारों के निर्णायकों और पुरस्कृतों के बीच के रिश्तों की परतें उधेड़ी जाती हैं। और बहुत मज़े की बात यह कि भले ही विवाद पुरस्कारों को लेकर ज़्यादा सामने आते हों, मामला सम्मानों का और ज़्यादा संगीन है। पुरस्कार देने में कम से कम (दिखावटी ही सही) एक प्रक्रिया का पालन तो किया जाता है, सम्मानों का मामला तो एकदम खुला खेल फर्रूखाबादी होता है। सम्मान के मामले में कोई तर्क, कोई जवाबदेही नहीं होती है। बहुत बार केवल प्रभाव, पद, दृश्यता या किसी का सम्मान कर ख़ुद उससे लाभान्वित होने की प्रवृत्ति इनके मूल में होती है। यह हम रोज़ देखते हैं कि बहुत सारी संस्थाएं बहु प्रतिष्ठित जन को सम्मानित करती हैं। समझा जा सकता है कि ऐसे सम्मानों के पीछे ख़ुद उनके प्रतिष्ठित होने का स्वार्थ छिपा होता है।

भारत में पिछले दशकों में पुरस्कारों की संख्या जितनी बढ़ी है, सम्मानों का विस्तार और वैभव उससे कहीं अधिक फला फूला है। साहित्य से लेकर सिनेमा तक, व्यापार से लेकर सामाजिक जीवन तक, और शिक्षा से लेकर आध्यात्मिकता तक-पुरस्कारों और सम्मानों की एक पूरी समानांतर संस्कृति विकसित हो चुकी है। अलग-अलग चैनल अपने-अपने कार्यक्रमों को पुरस्कृत करते हैं। विभिन्न जाति और धर्म अपने-अपनों को पुरस्कृत व सम्मानित करते हैं। यहां साधनों का दारिद्रय और उनकी विपुलता भी मज़ेदार दृश्य उपस्थित करते हैं। विशेष रूप से साहित्य की दुनिया में एक शॉल, एक नारियल और कम्प्यूटर पर बनवाए गए एक मान पत्र से ही सम्मान हो जाता है, बल्कि कभी-कभी तो यह सारा कर्म भी ऑनलाइन ही, बग़ैर हर्र फिटकरी लगाए, सम्पन्न हो जाता है, वहीं दूसरी तरह वैभव शाली समुदाय भव्य सभागारों में महान व्यक्तित्वों की साक्षी में ऐसे आयोजन कर लोगों की आंखों को चौंधियाते रहते हैं। इस सब को देखते हुए यह प्रश्न भी बार-बार सर उठाता है कि क्या जिसे पुरस्कार दिया गया है वह वाकई उसका हक़दार था, और जिसे सम्मानित किया गया है क्या वह उसका पात्र था, और क्या इस सम्मान से उसके यश में तनिक भी वृद्धि हुई है? और जैसे इतना ही पर्याप्त न हो, अब तो बाकायदा इस तरह के विज्ञापन आने लगे हैं जो ललचाते हैं कि आप अपनी जेब ढीली करके कोई पुरस्कार या सम्मान प्राप्त कर सकते हैं! सब कुछ बहुत बिंदास होता है। और लोग इन्हें भी हासिल करते हैं। न केवल हासिल करते हैं, सगर्व इनका प्रदर्शन भी करते हैं, यह ग़लतफहमी पालते हुए कि औरों को तो कुछ पता होगा ही नहीं।

इस बात को समझा जाना चाहिए कि किसी भी समाज में सम्मान की सबसे बड़ी शर्त उसकी विश्वसनीयता है। सम्मान जितना दुर्लभ होगा, उतना ही अर्थपूर्ण होगा। और जितना अधिक वह प्रचार, शक्ति और छवि-निर्माण का उपकरण बनेगा, उतनी ही तेजी से उसका नैतिक कद घटता जाएगा।किसी सभ्यता की परिपक्वता इस बात से भी मापी जाती है कि वह सम्मान किसे देती है-सत्ता को, प्रसिद्धि को, या मौन श्रम को। क्योंकि अंततः पदक धातु से बनते हैं, किंतु सम्मान सार्वजनिक विश्वास से। और विश्वास एक बार क्षीण हो जाए, तो सबसे चमकीला अलंकरण भी केवल चमक रह जाता है, गरिमा का पर्याय नहीं बन पाता।

विशेषतः साहित्यिक और सांस्कृतिक संसार में यह अनुभव बार-बार सामने आता है कि पुरस्कारों के पीछे कभी-कभी गुट, नेटवर्क और वैचारिक निष्ठाएं सक्रिय रहती हैं। फिर भी वहां रचना अंततः निर्णायक बनी रहती है। कोई औसत रचना केवल पुरस्कारों के सहारे इतिहास में बहुत दूर तक नहीं चलती हैं। क्षणिक सुख भले ही मिल जाए, कुछ समय बाद किसी को याद नहीं रहता कि ऐसी कोई रचना थी भी, या ऐसा कोई तथाकथित रचनाकार भी था।इस बात को समझा जाना चाहिए कि समय सबसे कठोर निर्णायक है। उसने अनेक पुरस्कृत नामों को भुला दिया और अनेक उपेक्षित रचनाकारों को बाद में प्रतिष्ठा दी है। लेकिन सम्मानों की दुनिया में समय की कसौटी अपेक्षाकृत धुंधली होती है। वहां तात्कालिकता अधिक प्रभावी होती है। सम्मान कई बार सामाजिक संवाद से अधिक सार्वजनिक प्रदर्शन में बदल जाते हैं। आज स्थिति यह है कि हर सप्ताह किसी न किसी राष्ट्रीय गौरव, वैश्विक व्यक्तित्व, विश्व विभूति या आइकन ऑफ द ईयर जैसे अलंकरणों का आयोजन दिखाई देता है। उनमें से अनेक सम्मान ऐसे होते हैं जिनकी विश्वसनीयता से अधिक उनकी फोटोग्राफिक उपयोगिता महत्वपूर्ण होती है। ऐसे सम्मान देने वाले अपनी विज्ञिप्तयों में बाकायदा इस बात का उल्लेख भी करते हैं कि वे आपके सम्मान ग्रहण को प्रचारित करेंगे। सम्मान देने के भीअनेक तरीके हैं। समारोह में किसी को सम्मान प्रदान करने के अलावा किसी के नाम पर किसी सड़क, भवन, या संस्थान या गांव-शहर का नामकरण भी सम्मान देने का तरीका है और इधर इसका चलन बहुत ज़्यादा बढ़ा है। बहुत बार तो यह रोचक दृश्य भी सामने आता है कि कल तक जो भवन किसी के नाम से जाना जाता है, सत्ता परिवर्तन के बाद वह किसी और के नाम से जाना जाने लगता है।

सम्मान देने की यह प्रवृत्ति केवल निजी संस्थाओं तक सीमित नहीं है। राजनीति ने भी सम्मान की प्रतीकात्मक शक्ति को बहुत गहराई से समझा है। लोकतंत्र में छवि ही पूंजी बनती जा रही है और सम्मान उस छवि को अंतरराष्ट्रीय वैधता प्रदान करने का एक प्रभावी माध्यम बन गए हैं। यही कारण है कि अब विदेशी मंचों पर दिए जाने वाले अलंकरण, विश्वविद्यालयीय उपाधियाँ, सांस्कृतिक अभिनंदन और वैश्विक नागरिक सम्मानों को घरेलू राजनीतिक प्रतिष्ठा के विस्तार की तरह प्रस्तुत किया जाने लगा है।

निस्संदेह किसी भारतीय व्यक्तित्व, चाहे वह कलाकार हो, शेफ़ हो, खिलाड़ी हो, राजनीतिक व्यक्तित्व हो – जो भी हो, उसे विदेशों में मिलने वाला सम्मान देशवासियों के लिए गौरव का विषय हो सकता है। इसे भारत की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति का संकेत भी माना जा सकता है। लेकिन विवेक का तकाजा यह भी है कि सम्मान और कूटनीतिक शिष्टाचार के बीच के अंतर को समझा जाए। दुनिया के अनेक देशों में राजनयिक संबंधों के तहत राष्ट्राध्यक्षों और प्रधानमंत्रियों को अलंकरण दिए जाते रहे हैं। वे कई बार सांस्कृतिक सद्भाव, रणनीतिक निकटता या राजनीतिक संदेश का हिस्सा होते हैं; उन्हें हमेशा नैतिक या ऐतिहासिक महानता का अंतिम प्रमाण मान लेना युक्ति संगत नहीं होगा। समस्या तब पैदा होती है जब सम्मानों को आलोचना रहित महिमामंडन के उपकरणों में बदल दिया जाता है। तब प्रश्न पूछना लगभग असभ्यता मान लिया जाता है। धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन में यह भ्रम फैलने लगता है कि जितने अधिक सम्मान, उतनी अधिक ऐतिहासिक महानता। जबकि इतिहास की दृष्टि कहीं अधिक धैर्यवान और निर्मम होती है। जिन्हें आज अगणित सम्मानों से अलंकृत किया जात है समय बीतते न बीतते वे कूड़े के ढेर पर उपेक्षित पड़े पाए जाते हैं। समय अपना न्याय गले में लटके मेडलों की संख्या से नहीं, समाज पर पड़े वास्तविक प्रभाव के आधार पर करता है।

और यह बात जितनी सामान्य, रस्मी, औपचारिक या दिखावटी सम्मानों के लिए सच है उतनी ही उन सभी सम्मानों के लिए भी सच है जिनकी बड़ी प्रतिष्ठा है। बुकर और पुलिट्ज़र से लगाकर मैगसेसे और नोबल पुरस्कार तक, हर छोटे-बड़े पुरस्कार और सम्मान के साथ विवाद, असहमतियाँ और राजनीतिक प्रश्न जुड़े रहे हैं। इससे पुरस्कारों और सम्मानों की गरिमा समाप्त नहीं होती, लेकिन यह स्मरण अवश्य बना रहता है कि कोई भी अलंकरण अंतिम सत्य नहीं होता।

इस बात को समझा जाना चाहिए कि किसी भी समाज में सम्मान की सबसे बड़ी शर्त उसकी विश्वसनीयता है। सम्मान जितना दुर्लभ होगा, उतना ही अर्थपूर्ण होगा। और जितना अधिक वह प्रचार, शक्ति और छवि-निर्माण का उपकरण बनेगा, उतनी ही तेजी से उसका नैतिक कद घटता जाएगा।किसी सभ्यता की परिपक्वता इस बात से भी मापी जाती है कि वह सम्मान किसे देती है-सत्ता को, प्रसिद्धि को, या मौन श्रम को। क्योंकि अंततः पदक धातु से बनते हैं, किंतु सम्मान सार्वजनिक विश्वास से। और विश्वास एक बार क्षीण हो जाए, तो सबसे चमकीला अलंकरण भी केवल चमक रह जाता है, गरिमा का पर्याय नहीं बन पाता।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का अवसर : हॉर्मुज़ संकट

हॉर्मुज संकट ने आज हमें अवसर दिया है कि हम रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को नियंत्रित करें, यूरिया और डीएपी का संतुलित उपयोग बढाएं तथा दीर्घकालीन नीति तैयार करें

पंकज मीणा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से सात अपील की हैं। इन अपीलों में सबसे अधिक चर्चा सोना खरीदने से बचने और पेट्रोल-डीजल की खपत कम करने को लेकर हो रही है। हालांकि, यह भी सत्य है कि जब-जब देश पर संकट आया है, तब-तब प्रधानमंत्रियों ने इस प्रकार की अपील की हैं।

देश में जब अन्न का संकट आया था और अमेरिका गेहूं के आयात को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा था, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री ने सप्ताह में एक दिन उपवास रखने की अपील की थी, जिसका देश की जनता पर सकारात्मक प्रभाव पडा था। वर्ष 1967 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सोना न खरीदने की अपील की थी, वहीं 2013 में मनमोहन सिंह की सरकार ने भी देशवासियों से सोना खरीदने से बचने का आग्रह किया था।

देश के आयात पर नजर डालें तो सोने पर लगभग 9.3 प्रतिशत और पेट्रोलियम उत्पादों पर करीब 17.4 प्रतिशत आयात खर्च है। इनका भुगतान डॉलर में किया जाता है और डॉलर में होने वाला यह भारी भुगतान रुपए को कमजोर बनाता है। प्रधानमंत्री की सातों अपीलों पर गौर करें तो वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से डॉलर भुगतान कम करने से जुड़ी हैं। इनके दूरगामी प्रभाव समझने होंगे।

देश में वर्ष 2024-25 के दौरान लगभग 70-72 मिलियन टन रासायनिक उर्वरकों की खपत हुई, जिसमें मुख्य रूप से यूरिया, डीएपी और पोटाश शामिल हैं। इनमें से लगभग 73 प्रतिशत उत्पादन भारत में ही हो रहा है और पिछले पांच वर्षं में उत्पादन लगातार बढा है। उर्वरक उत्पादन में यह वृद्धि भारत के आत्मर्निभर बनने के संकल्प को दर्शाती है। इसके बावजूद पोटाश के मामले में भारत अब भी लगभग पूरी तरह आयात पर निर्भर है। देश के कुल आयात व्यय का करीब 1.9 प्रतिशत उर्वरक आयात पर खर्च होता है। अनुमान है कि वर्ष 2025-26 में उर्वरक आयात पर लगभग 1.5 लाख करोड रुपए खर्च होंगे।

देश के किसानों में अधिक उत्पादन की प्रतिर्स्पधा और बढती अपेक्षाओं के कारण भारत में औसतन 199 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर उर्वरकों का उपयोग किया जा रहा है। पंजाब, बिहार और तेलंगाना ऐसे राज्य हैं, जहां प्रति हेक्टेयर सर्वाधिक उर्वरक उपयोग होता है। उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से भले ही अल्पकाल में उत्पादन बढ जाता हो, लेकिन इसके दुष्प्रभावों के कारण गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढता है। साथ ही, इससे भारत का आयात बिल भी लगातार बढता है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के कारण उर्वरक उत्पादन वर्तमान में अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंचा है, लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उर्वरक उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस की आवश्यकता होती है, जिसकी आपूर्ति मुख्य रूप से खाडी देशों पर निर्भर है। अर्थात, उर्वरक उत्पादन में वृद्धि के बावजूद इसके प्रमुख घटकों- प्राकृतिक गैस और पोटाश के लिए भारत अब भी आयात पर निर्भर है।

देश का किसान विश्व के अन्य किसानों के मुकाबले मजबूती से खडा रह सके, इसके लिए भारत सरकार कृषि के विभिन्न आदानों पर सब्सिडी प्रदान करती है। देश में उर्वरक सब्सिडी पर प्रतिवर्ष लगभग 1.5 से 2 लाख करोड रुपए खर्चा किए जाते हैं। यूरिया और डीएपी पर किसानों को प्रति बोरी 1200 से 2700 रुपए तक की सब्सिडी दी जा रही है, जिसका भुगतान सीधे कंपनियों को किया जाता है। यह भारी-भरकम सब्सिडी और बढता आयात बिल भारतीय खेती को महंगा बनाने के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था पर भी बोझ डालता है।

भारत में संकटों से लड़ने की अद्भुत क्षमता रही है। हजारों वर्षं का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब देश पर सामरिक, आर्थिक या महामारी का संकट आया, तब-तब भारत पहले से अधिक ताकत के साथ उभरकर सामने आया है। वर्तमान की केंद्र सरकार के समय ही हमने कोरोना के समय भी ऐसी स्थितियां बनते देखी हैं, जहां हमने आपदा को अवसर में बदलने की क्षमता विकसित की।

हॉर्मुज संकट ने आज हमें अवसर दिया है कि हम रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को नियंत्रित करें, यूरिया और डीएपी का संतुलित उपयोग बढाएं तथा दीर्घकालीन नीति तैयार करें, जिसके तहत उर्वरकों की खपत को धीरे-धीरे कम किया जा सके। सिक्किम जैसे छोटे राज्य ने वर्ष 2016 में स्वयं को पूर्णतः जैविक खेती वाला राज्य घोषित किया था। देश के अन्य राज्यों को भी जैविक कृषि को प्रोत्साहित करते हुए किसानों को इससे जोडना चाहिए।

यदि सरकार जैविक कृषि उत्पादों के लिए विशेष मूल्य और प्रभावी विपणन व्यवस्था विकसित करे, तो इससे न केवल देश की जनता का स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था भी अधिक मजबूत और स्वस्थ बनेगी।

–पंकज मीणा,
प्रदेश प्रवक्ता, भाजपा
राजस्थान

मोदी की यूएई यात्राः ऊर्जा सुरक्षा से रक्षा साझेदारी तक, खाड़ी में भारत की बढ़ती भू-राजनीतिक उपस्थिति

डॉ. योगेश शर्मा

पश्चिम एशिया में बढ़ती भू-राजनीतिक अस्थिरता, ईरान-इज़रायल-अमेरिका तनाव, होर्मुज़ जलडमरूमध्य की ऊर्जा सुरक्षा अनिश्चितता, और खाड़ी देशों के बीच बदलते समीकरणों के बीच 15 मई 2026 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यूएई-अबू धाबी यात्रा समय की दृष्टि से भले ही छोटी रही, लेकिन उसके संकेत बहुत बड़े हैं। इस यात्रा के दौरान भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच रक्षा, ऊर्जा, समुद्री अवसंरचना, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और निवेश जैसे क्षेत्रों में कई महत्त्वपूर्ण समझौते हुए, जो दोनों देशों के संबंधों को नई रणनीतिक गहराई प्रदान करते हैं। यह यात्रा केवल एक औपचारिक कूटनीतिक दौरा नहीं थी, बल्कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा, सामरिक हितों और खाड़ी क्षेत्र में उसकी बढ़ती रणनीतिक भूमिका का स्पष्ट संकेत भी थी।

इस यात्रा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण आयाम ऊर्जा सुरक्षा है। भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात से पूरा करता है, इसलिए होर्मुज़ जलडमरूमध्य या खाड़ी क्षेत्र में कोई भी संकट सीधे भारत की अर्थव्यवस्था, और आम उपभोक्ता को प्रभावित करता है। क्षेत्रीय तनावों के कारण आपूर्ति बाधित होने और कच्चे तेल की कीमतों में वैश्विक बाजारों में उतार-चढ़ाव के बीच दोनों देशों ने रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी भारत के भूमिगत तेल भंडारों में अपनी भागीदारी को और मजबूत करेगी। यह भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि संकट के समय रणनीतिक तेल भंडार देश की ऊर्जा आपूर्ति को स्थिर बनाए रखने में मदद करेंगे। दूसरी ओर, यूएई को भी भारत जैसे विशाल और स्थायी बाजार तक दीर्घकालिक पहुँच सुनिश्चित होगी।

इसी क्रम में एलपीजी आपूर्ति से जुड़ा समझौता भी भारत की घरेलू ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत में उज्ज्वला योजना के बाद एलपीजी केवल शहरी सुविधा नहीं रही, बल्कि ग्रामीण परिवारों, महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छ ईंधन नीति से जुड़ा विषय बन गई है। एलपीजी आपूर्ति समझौता भारत के लिए केवल व्यावसायिक समझौता नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा का साधन भी है। इस समझौते का उद्देश्य भारत को एलपीजी की दीर्घकालिक और प्राथमिकता आधारित आपूर्ति सुनिश्चित करना है। वर्तमान में भारत के कुल एलपीजी आयात का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा यूएई से आता है। ऐसे में यह समझौता न केवल ऊर्जा आपूर्ति को स्थिर करेगा, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में मूल्य अस्थिरता के प्रभाव को कम करने में भी सहायक होगा।

इस यात्रा का महत्वपूर्ण परिणाम भारत और यूएई के बीच रणनीतिक रक्षा साझेदारी के फ्रेमवर्क पर सहमति रहा। यह समझौता केवल पारंपरिक सैन्य अभ्यासों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्नत रक्षा तकनीकों के संयुक्त विकास, सह-उत्पादन, खुफिया जानकारी साझा करने और आतंकवाद-रोधी सहयोग को संस्थागत रूप देने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह रक्षा सहयोग भारत की खाड़ी नीति में एक बड़ा बदलाव है। समुद्री अवसंरचना और ब्लू इकोनॉमी के क्षेत्र में भी इस यात्रा के दौरान महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। गुजरात के वडिनार में जहाज मरम्मत केंद्र स्थापित करने के लिए दोनों देशों ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह परियोजना भारत के समुद्री बुनियादी ढांचे को मजबूती देने के साथ-साथ उसे जहाज मरम्मत और समुद्री लॉजिस्टिक्स के क्षेत्रीय केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की बढ़ती सामरिक भूमिका को देखते हुए इस प्रकार की परियोजनाएँ भविष्य में भारत की समुद्री शक्ति और व्यापारिक क्षमता को और सुदृढ़ करेंगी।

तकनीकी और डिजिटल सहयोग के क्षेत्र में यूएई द्वारा भारत में आठ एआई सुपर कंप्यूटर स्थापित करने की घोषणा विशेष महत्व रखती है। यूएई की पूंजी और भारत की तकनीकी क्षमता मिलकर इस दिशा में बड़ा अवसर बना सकते हैं। यह समझौता स्पष्ट करता है कि भारत-यूएई संबंध अब पारंपरिक ऊर्जा सहयोग से आगे बढ़कर भविष्य की तकनीकों और डिजिटल शक्ति-संतुलन तक पहुँच चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, यूएई द्वारा भारत में 5 अरब डॉलर के निवेश की घोषणा भी इस यात्रा का एक बड़ा परिणाम रही। यह निवेश भारत की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, वित्तीय संस्थानों और आवास क्षेत्र को मजबूती प्रदान करेगा। यूएई पहले ही भारत में बड़े निवेश की प्रतिबद्धता दिखा चुका है, और अब यह स्पष्ट है कि वह भारत को केवल बाज़ार नहीं, बल्कि दीर्घकालिक विकास साझेदार के रूप में देख रहा है।

भारत-यूएई संबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये संबंध अचानक बने हुए संबंध नहीं हैं। अरब सागर ने सदियों से भारतीय उपमहाद्वीप और खाड़ी को व्यापार, संस्कृति और श्रम-गतिशीलता के माध्यम से जोड़ा है। यूएई के गठन के बाद संबंधों का केंद्र तेल और भारतीय श्रमिक बन गए। लंबे समय तक यह रिश्ता "लेन-देन आधारित" रहा, भारत ऊर्जा और रोजगार के अवसरों से जुड़ा था, जबकि यूएई को भारतीय श्रम, बाज़ार और सेवाओं से लाभ मिलता था। लेकिन 2015 के बाद यह संबंध एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बदल गया। प्रधानमंत्री मोदी की 2015 की यूएई यात्रा ने वर्षों के अंतराल के बाद उच्च-स्तरीय राजनीतिक संपर्क को पुनर्जीवित किया। उसके बाद भारत-यूएई संबंधों में सुरक्षा सहयोग, आतंकवाद-विरोधी समन्वय, निवेश, फिनटेक, डिजिटल भुगतान, ण्ईं और घ्2ळ2 जैसे मंचों के माध्यम से नई गहराई आई। 2022 में व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते ने दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को संस्थागत आधार दिया।

भारत और यूएई के बीच संबंध अब केवल ऊर्जा आयात या प्रवासी भारतीयों तक सीमित नहीं हैं। दोनों देशों के बीच 100 अरब डॉलर से अधिक का द्विपक्षीय व्यापार है और यूएई आज पूरे खाड़ी क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है। कच्चे तेल, एलपीजी, एलएनजी, सोना, निवेश, बंदरगाह, लॉजिस्टिक्स, फिनटेक, रक्षा और डिजिटल अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों की परस्पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है। इसलिए खाड़ी क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अस्थिरता भारत के आर्थिक हितों को सीधे प्रभावित कर सकती है। यही कारण है कि भारत यूएई की स्थिरता को अपनी आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा से जोड़कर देखता है। इस यात्रा का सबसे बड़ा संदेश यह है कि भारत अब पश्चिम एशिया को केवल तेल-क्षेत्र के रूप में नहीं देखता। भारत के लिए यह क्षेत्र ऊर्जा सुरक्षा, निवेश, रक्षा, डिजिटल भुगतान, एआई, समुद्री संपर्क, प्रवासी हित, खाद्य सुरक्षा और वैश्विक शक्ति-संतुलन का केंद्र है।

प्रधानमंत्री मोदी की 2026 की यात्रा को केवल एक नियमित द्विपक्षीय कूटनीतिक दौरे के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह पश्चिम एशिया में तेजी से बदलते सामरिक परिदृश्य के बीच भारत की संतुलित लेकिन स्पष्ट रणनीतिक स्थिति का संकेत भी है। ईरान-अमेरिका-इज़रायल संघर्ष के दौरान जिस प्रकार यूएई पर मिसाइल और ड्रोन हमले हुए, उससे यह स्पष्ट हो गया कि खाड़ी क्षेत्र अब प्रत्यक्ष भू-राजनीतिक संघर्ष का संवेदनशील केंद्र बन चुका है। ऐसे समय में प्रधानमंत्री मोदी का यूएई नेतृत्व के साथ एकजुटता प्रदर्शित करना इस बात का संकेत था कि भारत अपने प्रमुख रणनीतिक और आर्थिक साझेदारों के साथ संकट की घड़ी में खड़ा रहना चाहता है।

इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण संदेश यह भी था कि भारत पश्चिम एशिया में "मल्टी-अलाइनमेंट" यानी बहु-संतुलित कूटनीति की नीति पर आगे बढ़ रहा है। भारत एक ओर यूएई, सऊदी अरब और इज़रायल जैसे देशों के साथ रणनीतिक संबंध मजबूत कर रहा है, वहीं दूसरी ओर ईरान के साथ संवाद और संपर्क बनाए रख रहा है। इस प्रकार भारत क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक सहयोग को प्राथमिकता दे रहा है। प्रधानमंत्री मोदी की यूएई यात्रा ने यह संकेत दिया कि भारत खाड़ी क्षेत्र में केवल एक ऊर्जा खरीदार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार और विश्वसनीय रणनीतिक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका निभाना चाहता है। भारत अब खाड़ी में केवल केवल ऊर्जा खरीदार नहीं, बल्कि सुरक्षा और विकास का सह-निर्माता है; और केवल ऐतिहासिक मित्र नहीं, बल्कि

भविष्य की भू-राजनीति का सक्रिय खिलाड़ी है।

–डॉ. योगेश शर्मा,
(लेखक संवैधानिक अध्येता और अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ हैं)।

राशिफल सोमवार 25 मई, 2026

पंडित अनिल शर्मा

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 4:09 तक, वज्र योग रात्रि 3:15 तक, तैतिल करण सायं 4:51 तक, चन्द्रमा प्रातः 9:07 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। कुमार योग रात्रि 4:09 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:20 तक, शुभ 9:01 से 10:42 तक, चर 2:05 से 3:46 तक, लाभ-अमृत 3:46 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

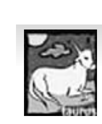

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

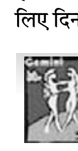

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

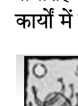

मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

तुला

व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

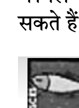

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

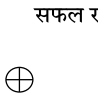

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।